ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3591481

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

राजस्थान के समकालीन कलाकारों पर लघु चित्रकला का प्रभाव

डॉ0 इन्दु जोशी [1], कमल किशोर कश्यप [2]
[1] शोध निर्देशिका, विभागाध्यक्षा चित्रकला विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा
[2] शोद्यार्थी, चित्रकला विभाग, आगरा कॉलेज आगरा

सारांश-
समकालीन कला जो नित नवीन रूपों का सृजन कर एक अकल्पनीय संसार के सृजन में विश्वास रखती है जिसने अभिव्यक्ति के अनेक साधनों के मिश्रण से अपपनी अनुभूति को एक आकार प्रदान करने के साथ अन्य प्रयोगधर्मी विषयों से कला की दूरी को कम करने का भी कार्य किया है जिसका परिणाम है कि एक कलाकृति का निर्माण आज संगीत की धुन, इत्र की सुगंध एवं अन्य कई प्रकार के वातावरण का सृजन कर मनुष्य के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का नवीन मार्ग प्रशस्थ हुआ।
मनुष्य के जीवन में कोई भी प्रयोग या कार्य के पीछे हमेशा से ही किसी चीज का प्रभाव या प्रेरणा कार्य करती आयी है उसी प्रकार से अनेक समकालीन कलाकारों ने भारतीय लघु, चित्र परम्पपरा से प्रभावितत होकर अपनी कला शैली का विकास कर नवीन रूपों के सृजन के साथ-साथ भारतीय चित्रकला की अमूल्य धरोहर को बदलतते परिवेश में गति प्रदान करने का कार्य किया है। छोटे-छोटे पारस्परिक रूप-रंग, विधि में बने लघु चित्रों के संसार को समकालीन कलाकारों ने कैनवास एवं तैल रंगों की दुनियां में प्रवेश कराकर समकालीन एवं पारस्परिक आकारों के समिश्रण से अद्भुत चित्र रुपों की रचना करने में सफल रहा है।
इस प्रकार के कला रूपों का सृजन कर सम्पूर्ण विश्व को आकर्षित करने वाले कलाकारों की एक लम्बी सूची राजस्थान में कार्यरत हैं जिसमें छोटू लाल, शैल चौपल, युगल किशोर उपाध्याय, रामेश्वर बरूटा, ललित शर्मा, प्रभा शाह, लालचंद मरोठिया, चरन शर्मा, किरण मुर्डिया आदि अनेक नाम शामिल हैं।

मुख्य शब्द – राजस्थान, समकालीन, चित्रकला, प्रभाव

Cite This Article: डॉ0 इन्दु जोशी, कमल किशोर कश्यप. (2019). "राजस्थान के समकालीन कलाकारों पर लघु चित्रकला का प्रभाव." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 204-206. https://doi.org/10.5281/zenodo.3591481.

प्रस्तावना-
भारतीय कला परम्परा एवं संस्कृति भारत वर्ष के गले में विद्यमान सुन्दर पुष्पों की माला के समान है जिसका प्रत्येक पुष्प एक अलग सुगन्ध और रंग की विविधता के साथ सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर अनन्त काल से आकर्षित करता आया है। इन पुष्पों में एक महत्वपूर्ण पुष्प है राजस्थान जो अपने आप में कला परम्पराओं, रीति-रिवाजों एवं संस्कृति की अनूठी विरासत समेटे सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित करता आया है जिसके रंगों की चमक प्रत्येक प्राणाी को सम्मोहित करती है। राजस्थान की संस्कृति व कला परम्परा की गठरी

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3591481

में अलग-अलग प्रान्त, जिलों, कस्बों, गांव की मिट्टी की महक के साथ गरिमामय इतिहास का अंश है जो राजस्थान की चमक को ओर बढ़ाने का कार्य करती है।

राजस्थान के इसी गौरव की एक कड़ी है राजस्थानी लघु चित्रकला जो राजा महाराजाओं के महलों से निकलकर राजस्थान के आम जन के जीवन का हिस्सा बनी राजस्थानी लघु चित्र शैली ने भारतीय चित्रकला में एक नवीन अध्याय जोड़ा जो भारतीय कला परम्परा की अविरल बहती गंगा में कमल पुष्प के समान प्रतीत होती है, साथ ही राजस्थान का धर्म से भी जुड़ाव प्राचीन काल से ही रहा है। "धर्म के समान राजस्थान के सामाजिक सम्प्रदायों में भी 8वीं से 10वीं शताब्दी में तत्कालीन राजस्थानी की "गुजर्रता" कहलाने वाले दक्षिण पश्चिमी भाग में भारतीतय चित्रकला की गुजराती शैली, जैन शैली, अपभ्रंश शैली के रूप में विकसित हुई। आगे चलकर इसी परम्परा में "राजस्थानी चित्रकला" का उद्‌भव और विकास हुआ।"[1]

राजस्थान की यही लघु चित्रकला अनेक समकालीन कलाकरों की प्रेरणा के रूप में कार्यरत हैं लघु चित्रों की रंग योजना, रेखा विधान, आकृति संयोजन, कथाकन विषय सभी अपने आप में एक सम्पूर्ण अध्ययन माला है जो सम्पूर्ण कला जगत को सदा से अपनी ओर सम्मोहित करते आये हैं इसी दृष्टि में राजस्थान जो कला और कलाकारों की शान के रूप में भी जाना जाता है जिसके आंचल में पलकर अनेक कलाकारों ने सम्पूर्ण विश्व में भारतीय कला वैभव का मान व सम्मान बढ़ाया साथ ही वैश्विक स्तर पर राजस्थानी चित्र परम्परा को स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया इन उत्कृष्ण कलाकारों में उदयपुर में जन्म छोटूलाल का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जो लघु चित्रों के सृजन कर परम्परागत कला को सहेजने का कार्य कर रहा था परम्परागत चित्रों की शिक्षा प्राप्त कर छोटू लाल जी ने अपने कला संसार का एक नया रूप तैयार करा जिसका मार्ग ज्यामितिक आकारों से होता हुआ लघु चित्रों की दुनियां में सैर करता है इनके चित्रों में समकालीन आकारों की रचना के साथ एक अद्‌भुद रंग विधान के दर्शन होते हैं जो दर्शक को आध्यात्मिकता से जोड़ता हुआ एक सुंदर अनुभूति कराते हैं, वही राजस्थानी चित्र परम्परा का नये सन्दर्भों में प्रस्तुतिकरण शैल चौयल के चित्रों में देखा जा सकता है। इनकी शैली में मेवाड़ शैली का सृजनात्मक संसार देखने को मिलता है। शैल चौयल के चित्रों में आकर्षक रंग योजना और संयोजन के अद्‌भुद दर्शन है, इसका सबब यह है कि के शैल चोपल ने परम्परा को एक सीढ़ी की तरह इस्तेमाल कर राजस्थानी समकालीन कला को गति प्रदान करने का कार्य किया।

इन सबसे विपरीत रामेश्वर बरुटा जी ने राजस्थानी लोक परम्परा और लघु चित्र परम्परा को समकालीन संदर्भों में रूपान्तरित कर वर्तमान कला को एक नवीन आकार प्रदान करा। लघु चित्रों के महलों, गुम्मदों एवं वास्तु आकारों को आधार बनाकर चित्रण करने वाले कलाकारों में राजस्थान के ललित तशर्मा जी की अभिव्यक्ति ज्यामितीतय रूपों की चादर ओढ़े मोहक आकारों से सृजित है। ललित शर्मा जी के चित्रों में प्राकृतिक वातावरण एवं सुन्दर भवनों का तैल माध्यम में निर्माण राजस्थान की चित्रकला के साथ-साथ स्थापत्य कला के भी अद्‌भुद उदाहरण प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार की चित्र रचना में एक नाम ओर है जो राजस्थानी समकालीन कला की गरिमा को बढ़ाने में कार्यरत हैं। प्रभा शाह के तैल चित्र भी राजस्थानी स्थापत्य कला के वैभव को समेट हुए आकारों से सुशोभित है।

मेवाड़ के महलों और प्राकृतिक वातावरण को समेटने में किरण मुर्डिया जी का योगदान भी अतुलनीय है वही युगल किशोर उपाध्याय जी का चित्रण विधान भी प्राकृतिक वातावरणा एवं पशु-पक्षियों के सुन्दर संयोजन से सजा है जो लघु चित्रों के सपट रंगारंग शैली और पशु-पक्षियों के प्रति आकर्षण को दर्शाता है।

[1] रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी जयपुर।

इनके अतिरिक्त अन्य कई महत्वपूर्ण कलाकार इस दिशा में कार्यरत है और राजस्थानी परम्परागत चित्रण शैली को नवीन रूप प्रदान कर समकालीन कला की मुखय धारा से जोड़ रहे है।

निष्कर्ष-इन सभी राजस्थानी कलाकारों की चित्रण अभिव्यक्ति को देखने, समझने के उपरांत यह कहना गलत नहीं होगा कि राजस्थान के अनेक समकालीन कलाकर लघु चित्र परम्परा ने काफी गहराई तक प्रभावित किया है जो भारतीय समकालीन कला के लिए एक अच्छा मार्ग हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सची-

[1] कला और साहित्य, कैलाश दहिया, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।
[2] भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास, डॉ0 रीता प्रताप, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
[3] पारम्परिक रेखांकन, अर्चना रानी, कृष्णा प्रकाशन (प्रा0) लि0 मेरठ।
[4] कला अनुभव, हिरिपन्ना, पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली।
[5] कला के वैचारिक और सौन्दर्यात्मक पहल, आव्नेर जींस, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।

*Corresponding author.
E-mail address: onlykamalkishore8007@ gmail.com